फेफडो का कैसंर (Lung Cancer)

फेफडें का कैंसर पुरूषों में सबसे ज्यादा पाऐ जाने वाला कैंसर है और महिलाओं में भी यह एक मुख्य कैंसर है। यह कैंसर, फेफडे की कोशिकाओं का अनियंत्रित रूप से बड़ने के कारण होता है। सिगरेट , बीडी और प्रदुषित वातावरण में श्वास लेना इसके मुख्य कारण है। बीडी और सिगरेट के सेवन से बहुत ही हानिकारक रसायन श्वास द्वारा फेफडे में प्रवेश कर जाते है। इन हानिकारक कणो को फेफडे से निकालने का काम फेफडे में पाई जाने वाली बाल समान कोशिकॉऐ करती है। जो की धुए के संपर्क मे आने से काम करना बंद कर देती है।

फेफडो के कैंसर कि पहचान इन लक्षणो से होती है।

– लम्बें समय से खॉसी होना जो इलाज के बावजुद रहती है।

– छाती में दर्द

– श्वास फूलना

– खॉसी में खून आना

– वजन में कमी और आवाज का बदल जाना आदि

फेफडे के कैंसर की जॉच :–

– छाती का (एक्स – रे)

– सी टी स्केन

– सुई से फेफडे की गठान की जॉच

अन्य जॉचे :–

– खंखार की जॉच

– कई बार कैंसर कि गठान दुरबीन द्वारा Biopsy की जाती है।

– तो कई बार यह कैसंर फैल जाता है और छाती से बड़कर गले मे गठान उत्पन्न कर सकता है।

– इस गठान से Biopsy ली जाती है और पैथौलोजिस्ट द्वारा बताया जाता है कि यह किस प्रकार का कैंसर है।

फेफडे का कैंसर मुख्यता दो प्रकार का होता है :–

1 Small Cell कैंसर जो अति शीघ्र फैलता है 15 – 20 % पाया जाता है।

2 Non Small Cell कैंसर जो कि 80 % ज्यादा पाया जाता है।

इलाज की पद्वती

– कैंसर की गठान का शल्यचिकित्सा के माध्यम से इलाज किया जाता है।

– Chemotherapy दवाईयों से भी इलाज होता है।

– इसके साथ साथ Radiotherapy भी बीमारी को फैलने से रोकने के लिए कारगर है ।

आर. डी. गार्डी मेडिकल कालेज में इन तीनों पद्वत्तियो का अत्यआधुनिक ईलाज उपलब्ध है अनुभवी विशेषज्ञो द्वारा यहॉ कैंसर का इलाज हो जाता है। कैंसर कि बीमारी अगर बहुत फैल गई है तो palliative care की भी सुविधा उपलब्ध है जिससे मरीज को दर्द और तकलीफ से मुक्ति मिल सकती है । नवीन इलाज के कारगर तरीको से भी बिमारी पे नियंत्रण पाया जा सकता है । इसमे प्रमुख उदाहरण Targetted Therapy तथा Immunotherapy है।

बीडी तथा सिगरेट का सेवन करना फेफडे के कैंसर का प्रमुख कारण है। इनसे उत्पन्न धुए से सॉस कि नलियों तथा कोशिकाओं में घाव होता है । इन सब का सेवन तुरन्त बंद करने से बीमारी से उभरने मे बहुत मदद मिलती है। बीडी या सिगरेट के सेवन से न केवल खुद को हानी होती है बल्कि परिवारजनो में भी इसका दुश्प्रभाव होता है। यह बच्चो तथा बुजुर्ग को ज्यादा हानी पहुचाता है और कैंसर जैसे बीमारी का अंदेशा बड़ाता हैं, कुछ व्यवसाय एसे भी है जो कैंसर के रोग बड़ाते है जैसे कि जो बिना बचाव के और तेज केमिकल के संपर्क में रहते है। हवा में फैला प्रदुषण जो वाहनो , इमारतो – भवनो के बनने में, प्राली जलाने के कारण हमारे शहरो में जमा हो जाता है, इस वातावरण मे श्वास लेना न केवल दमा तथा COPD का कारण बनता है बल्कि हृदय रोग , फेफडे का कैंसर का भी कारण है। इस बीमारी से ग्रसित मरीज आर. डी. गार्डी मेडिकल कालेज के श्वसन रोग विभाग मे आकर अपना प्रशिक्षण करवा सकते हैं और कैंसर के विशेषज्ञो से भी सलाह पा सकते है।

उपचार – हेतु : विशेषज्ञ प्रोफेसर एवं डॉक्टरो की टीम में सम्मिलित

1. डॉ. आरती जुल्का – एम.डी. प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष श्वसन रोग विभाग
2. डॉ. मुस्तफा सिगांपुरवाला – एम.डी. प्रोफेसर श्वसन रोग विभाग
3. डॉ. स्वप्निल जैन – एम.डी. असोसिएट प्रोफेसर श्वसन रोग विभाग
4. डॉ. अनिल सिंह बड़ाल – एम.डी. असिस्टेन्ट प्रोफेसर श्वसन रोग विभाग

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करे : – दिलीप शर्मा – 7987548806

– महेन्द्र झाला – 8964094354